



Shodhpith

International Multidisciplinary Research Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)

Volume: 2

Issue: 4

July-August 2026

आर. एम. सिंह (राही महिंदर सिंह) की यथार्थवादी पोर्ट्रेट कला: चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स का कला-ऐतिहासिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक अध्ययन

विनोद कुमार

शोधार्थी, ललित कला विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

डॉ. यति दत्त

शोध-निर्देशक, ललित कला विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब

Article Info: (Received- 19/04/2026, Accept- 20/5/2026, Published- 06/07/2026)

DOI- [10.64127/Shodhpith.2026v2i4009](https://doi.org/10.64127/Shodhpith.2026v2i4009)

सारांश

यह शोध-पत्र प्रसिद्ध स्वतंत्र चित्रकार आर. एम. सिंह (राही महिंदर सिंह) की यथार्थवादी पोर्ट्रेट कला तथा उनकी चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन के लिए कलाकार से संबंधित उपलब्ध साक्षात्कारात्मक सामग्री, कलाकार की कला-यात्रा तथा प्रस्तुत चार प्रमुख पोर्ट्रेट-जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया, मिस्टर हेनरी आला, सरदार मुख्तार सिंह संधू, प्रोफेसर जी. एस. मान तथा गुरु हरकृष्ण महाराज जीकृको आधार बनाया गया है। कलाकार की कला-यात्रा बचपन में रेलवे स्टेशन पर किए गए त्वरित स्केचों से प्रारंभ होकर आ. पंचारिक कला शिक्षा, स्वतंत्र व्यावसायिक कार्य, समाचार-पत्रों के लिए चित्रांकन तथा अंततः संसद भवन, राष्ट्रपति भवन और अंतरराष्ट्रीय निजी संग्रहों तक पहुँचती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर. एम. सिंह के लिए पोर्ट्रेट केवल चेहरे की बाहरी समानता स्थापित करने की प्रक्रिया नहीं है। वे ड्राइंग, प्रत्यक्ष अवलोकन, प्रकाश-छाया, त्वचा के सूक्ष्म रंग, चेहरे की मॉडलिंग, वेशभूषा, परिवेश, ऐतिहासिक संदर्भ, मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व और सांस्कृतिक प्रतीकों को एक साथ जोड़कर चित्र का निर्माण करते हैं। चयनित कृतियों में यथार्थवाद के अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं—ऐतिहासिक यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, सांस्कृतिक यथार्थवाद तथा आध्यात्मिक यथार्थवाद। जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया का पोर्ट्रेट वीरता और सामुदायिक स्मृति का प्रतिनिधित्व करता है; हेनरी आला का चित्र वंश, पंजाब-फ्रांस संबंध और सांस्कृतिक विरासत को जोड़ता है; सरदार मुख्तार सिंह संधू का चित्र चेहरे की सूक्ष्म मॉडलिंग और जीवन-सदृश उपस्थिति पर केंद्रित है; प्रोफेसर जी. एस. मान का पोर्ट्रेट शांत व्यक्तित्व तथा पंजाबी सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करता है; जबकि गुरु हरकृष्ण महाराज जी का चित्र यथार्थवादी चित्रण को आध्यात्मिक अनुभूति के साथ जोड़ता है। इस प्रकार आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला व्यक्ति की दृश्य पहचान से आगे बढ़कर इतिहास, स्मृति, संस्कृति, आध्यात्मिकता और व्यक्तित्व का दृश्य आख्यान निर्मित करती है।



प्रमुख शब्द— आर. एम. सिंह, राही महिंदर सिंह, पोर्ट्रेट कला, यथार्थवाद, ऐतिहासिक पोर्ट्रेट, व्यक्तित्व—अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, सांस्कृतिक स्मृति, तेल चित्रकला, पंजाबी कला, आध्यात्मिक यथार्थवाद।

परिचय

पोर्ट्रेट चित्रकला दृश्य कला की ऐसी विधा है जिसमें किसी व्यक्ति की शारीरिक उपस्थिति के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व, सामाजिक स्थिति, मानसिक अवस्था, सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक संदर्भ को दृश्य रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। एक सफल पोर्ट्रेट केवल चेहरे की समानता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि दर्शक और चित्रित व्यक्ति के बीच ऐसी दृश्य उपस्थिति स्थापित करता है जिससे चित्र में जीवंतता का अनुभव उत्पन्न हो। आर. एम. सिंह (राही महिंदर सिंह) की कला इसी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। उनका कलात्मक विकास किसी एक क्षण में नहीं हुआ, बल्कि बचपन से लगातार स्केचिंग, प्रत्यक्ष अवलोकन और मानव चेहरे के अध्ययन के माध्यम से विकसित हुआ। रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के त्वरित स्केच बनाना उनके प्रारंभिक पोर्ट्रेट अभ्यास का महत्वपूर्ण आधार बना। समय के साथ यह अभ्यास औपचारिक कला शिक्षा और व्यावसायिक अनुभव से जुड़ा। उन्होंने चंडीगढ़ स्थित कला महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और 1986 में जेम पदकपदम चतुर्थ से स्वतंत्र कलाकार के रूप में जुड़े। बाद में जेम ज्त्पइनदम सहित अनेक संस्थागत और प्रकाशन-आधारित परियोजनाओं पर कार्य किया। उनकी कला-यात्रा का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य करना रहा। उन्होंने नियमित सरकारी अथवा निजी नौकरी के स्थान पर स्वतंत्र सृजन और कमीशन-आधारित कला को अपनाया। इस स्वतंत्रता ने उन्हें अलग-अलग प्रकार के विषयों, व्यक्तियों और सांस्कृतिक संदर्भों पर कार्य करने का अवसर प्रदान किया।



चित्र— शोध विषय के संदर्भ में चित्रकार आर. एम. सिंह जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी विनोद कुमार एवं उनके शोध-निर्देशक डॉ. यति दत्त।

शोध की समस्या

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला को केवल तकनीकी यथार्थवाद के संदर्भ में देखना उनके कलात्मक योगदान को सीमित कर देगा। उनकी चयनित कृतियों में चेहरे की समानता के साथ ऐतिहासिक संदर्भ, व्यक्तिगत स्मृति, सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक स्थिति और आध्यात्मिक अनुभूति भी दिखाई देती है। इसलिए इस शोध की मुख्य समस्या यह निर्धारित करना है कि आर. एम. सिंह किस प्रकार यथार्थवादी पोर्ट्रेट तकनीक के माध्यम से व्यक्ति के बाहरी स्वरूप से आगे बढ़कर उसके व्यक्तित्व, इतिहास, संस्कृति और भावनात्मक अथवा आध्यात्मिक अर्थ को चित्र में स्थापित करते हैं।

शोध के उद्देश्य

- आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- कलाकार की कला-यात्रा और उसके पोर्ट्रेट कौशल के विकास का विश्लेषण करना।
- उनकी चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स की विषय-वस्तु का अध्ययन करना।
- प्रत्येक पोर्ट्रेट में माध्यम, तकनीक, प्रकाश, रंग, पृष्ठभूमि और संरचना का विश्लेषण करना।

- यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति के संबंध को समझना।
- ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों की भूमिका का अध्ययन करना।
- कलाकार द्वारा व्यक्ति की पहचान और व्यक्तित्व को दृश्य रूप देने की प्रक्रिया का विश्लेषण करना।
- चयनित पोर्ट्रेट्स में सांस्कृतिक स्मृति और प्रतीकात्मकता का अध्ययन करना।
- आध्यात्मिक विषय वाले पोर्ट्रेट में यथार्थवाद और आध्यात्मिकता के समन्वय को समझना।
- आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में तकनीकी और वैचारिक विकास को स्थापित करना।

शोध-पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। इसमें कलाकार से संबंधित उपलब्ध साक्षात्कारात्मक विवरण, कला-यात्रा संबंधी सामग्री तथा चयनित पोर्ट्रेट पेंटिंग्स के विवरण को प्राथमिक सामग्री के रूप में लिया गया है। विश्लेषण में प्रत्येक कृति के लिए निम्न चरणों को अपनाया गया हैकृपहले कृति का परिचय, फिर विषय-वस्तु, उसके बाद निर्माण-प्रक्रिया, माध्यम एवं तकनीक, रंग एवं प्रकाश, पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक/ऐतिहासिक अर्थ और अंततः कलात्मक महत्व का विवेचन। यहाँ एक महत्वपूर्ण पद्धतिगत सावधानी आवश्यक है कि प्रस्तुत ऐतिहासिक एवं पारिवारिक विवरणों को मुख्यतः कलाकार द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्षात्कारात्मक विवरण के रूप में समझा जाना चाहिए। जहाँ स्वतंत्र ऐतिहासिक सत्यापन उपलब्ध नहीं है, वहाँ इन विवरणों को प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्य के बजाय कलाकार की व्याख्या/स्मृति के रूप में ग्रहण करना अधिक उपयुक्त है।

आर. एम. सिंह की कला-यात्रा: पोर्ट्रेट कलाकार के रूप में विकास

आर. एम. सिंह की कला-यात्रा औपचारिक कला शिक्षा से पहले ही प्रारंभ हो गई थी। गाँव में प्रारंभिक शिक्षा के दौरान उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए पठानकोट जाना पड़ता था। रेलगाड़ी की प्रतीक्षा के समय वे ड्राइंग, स्केचिंग और पेंटिंग करते थे। रेलवे स्टेशन, रेलगाड़ी, पटरियाँ और स्टीम इंजन उनके प्रारंभिक चित्रण के विषय थे। यह अनुभव उनके लिए केवल अभ्यास नहीं था। रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के त्वरित स्केच बनाने से उन्हें मानवीय चेहरे को कम समय में देखने, समझने और रेखाओं में पकड़ने का व्यावहारिक अनुभव मिला। दो यात्रियों के स्केच के बदले उन्हें पहली बार पारिश्रमिक प्राप्त हुआ। इस प्रकार पोर्ट्रेट उनके लिए बचपन में ही अवलोकन और व्यावसायिक अनुभव दोनों का माध्यम बन गया।

औपचारिक कला शिक्षा

दसवीं कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते वे व्यावसायिक चित्रकार के रूप में कार्य करने लगे थे। बाद में औपचारिक कला शिक्षा की आवश्यकता को समझते हुए उन्होंने चंडीगढ़ के कला महाविद्यालय में प्रवेश लिया। इससे उनकी तकनीकी दक्षता और कलात्मक दृष्टिकोण को संस्थागत आधार प्राप्त हुआ।

स्वतंत्र कलाकार के रूप में विकास

1986 में कला महाविद्यालय के तृतीय वर्ष में रहते हुए उन्हें The Indian Express में स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। बाद में The Tribune से भी उनका संबंध रहा। इस अनुभव ने उनके चित्रांकन, दृश्य-संचार और पेशेवर कला कौशल को विस्तृत किया।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान

उनका कार्य विभिन्न संस्थागत परियोजनाओं, पाठ्यपुस्तकों, कैलेंडरों और अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक प्रकाशनों तक पहुँचा। Singapore Sikh Education Foundation के लिए उन्होंने पहली से बारहवीं कक्षा तक की लगभग सौ शैक्षिक पुस्तकों के डिजाइन और चित्रांकन में योगदान दिया।

पोर्ट्रेट कला में उनकी राष्ट्रीय पहचान का एक महत्वपूर्ण चरण संसद भवन के लिए स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनेता गुरबख्श सिंह मुसाफिर का पोर्ट्रेट बनाना रहा। इसके पश्चात उन्होंने भारत के राष्ट्रपतियों के आधिकारिक पोर्ट्रेट



इस प्रकार एक रुपये के शुरुआती स्केच-पारिश्रमिक से लेकर राष्ट्रीय संस्थानों और उच्च-प्रोफाइल व्यक्तित्वों के पोर्ट्रेट तक की यात्रा उनके तकनीकी विकास, पेशेवर प्रतिष्ठा और दीर्घकालीन साधना को दर्शाती है।

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला की मूल अवधारणा

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला का पहला आधार ड्राइंग है। चेहरे की सही संरचना, अनुपात और विभिन्न अंगों का संबंध उनके यथार्थवाद की बुनियादी आवश्यकता है। बचपन के त्वरित स्केचिंग अभ्यास ने उन्हें चेहरे को तुरंत देखने और उसकी विशिष्ट विशेषताओं को पहचानने की क्षमता प्रदान की।

दूसरा आधार प्रत्यक्ष अवलोकन है। जहाँ संभव हो, कलाकार मॉडल के साथ बैठकर उसकी शारीरिक संरचना, मुद्रा, चेहरे के भाव, प्रकाश और परिवेश का अध्ययन करते हैं। प्रोफेसर जी. एस. मान और हेनरी आला के पोर्ट्रेट इस प्रक्रिया के अलग-अलग उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

तीसरा आधार प्रकाश और आयतन है। चेहरे के हल्के और गहरे क्षेत्रों को नियंत्रित करके कलाकार आकृति में त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

चौथा आधार व्यक्तित्व की पहचान है। उनके पोर्ट्रेट में चेहरा केवल शरीर का एक अंग नहीं बल्कि व्यक्ति के स्वभाव और मानसिक उपस्थिति का प्रमुख माध्यम बनता है।

पाँचवाँ आधार संदर्भ है। ऐतिहासिक व्यक्तियों के लिए वेशभूषा, हथियार, स्थापत्य और ऐतिहासिक वातावरण महत्वपूर्ण हैं, जबकि समकालीन व्यक्तियों के लिए उनका स्टूडियो, वस्त्र, कुर्सी या सांस्कृतिक परिवेश अर्थपूर्ण दृश्य संकेत बन सकते हैं।

पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स का विश्लेषण



1. जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया का पोर्ट्रेट Oil on Canvas, 30 × 24 इंच के वर्ष 2001

जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया का पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की ऐतिहासिक यथार्थवादी चित्रकला का महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह Oil on Canvas, 30 × 24 इंच के आकार में निर्मित कृति है और लगभग 2001 में पूर्ण हुई। उपलब्ध विवरण के अनुसार इसका निर्माण रामगढ़िया फाउंडेशन, दिल्ली, के लिए कमीशन के रूप में प्रारंभ हुआ था। बाद में परिस्थितियों के कारण यह निजी संग्रह में चला गया। यह कृति कलाकार की पसंदीदा पेंटिंग्स में इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें केवल व्यक्ति का चेहरा नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक योद्धा की सामूहिक स्मृति और वीरतापूर्ण व्यक्तित्व को चित्रित करने का प्रयास किया गया है।

ऐतिहासिक शोध

इस चित्र की निर्माण-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पक्ष शोध है। कलाकार के अनुसार ऐतिहासिक व्यक्तित्व का पोर्ट्रेट तैयार करने से पहले उपलब्ध साहित्य, ऐतिहासिक विवरण और संदर्भों का अध्ययन आवश्यक है।

यहाँ कलाकार का तरीका Historical Research+Visual Interpretation+Realistic Portraiture के रूप में समझा जा सकता है। अर्थात् पहले ऐतिहासिक चरित्र को समझना, फिर उसके दृश्य संकेतों को निर्धारित करना और अंततः उन्हें यथार्थवादी चित्रभाषा में प्रस्तुत करना।

वेशभूषा और हथियार

सफेद पगड़ी, केसरी/पीला बाना, नीला बाहरी वस्त्र, कलगी तथा हथियार चित्र की पहचानात्मक संरचना बनाते हैं। ये तत्व केवल सजावट नहीं बल्कि सामाजिक स्थिति, सैन्य पहचान और ऐतिहासिक भूमिका के संकेत हैं। विशेष रूप से हथियार Iconographic Elements के रूप में कार्य करते हैं। वे दर्शक को चित्रित व्यक्ति के योद्धा-स्वरूप की ओर निर्देशित करते हैं।

प्रकाश और रंग

सूर्यास्त की रोशनी तथा अपेक्षाकृत गहरे वातावरण का प्रयोग आकृति को उभारता है। सफेद पगड़ी और केसरी वस्त्र गहरे आकाश के सामने दृश्य विरोध उत्पन्न करते हैं। यहाँ स्पहीजदृवंता ब्दजतेंज केवल तकनीकी उपाय नहीं बल्कि वैचारिक उपकरण भी है। प्रकाश ऐतिहासिक व्यक्तित्व की वीरता और प्रभाव का प्रतीक बन जाता है।

‘लाइट टावर’ की अवधारणा

इस कृति की विशिष्ट अवधारणा जस्सा सिंह रामगढ़िया को एक प्रकार के ‘स्पहीज ज्वूमत’ के रूप में देखना है। गहरे वातावरण में प्रकाशित व्यक्तित्व को कलाकार समाज के लिए प्रेरणा, साहस, आशा और स्वतंत्रता की चेतना के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसलिए प्रकाश का अर्थ भौतिक प्रकाश से आगे बढ़कर ज्ञान, साहस, आशा और सामाजिक चेतना तक विस्तृत हो जाता है।

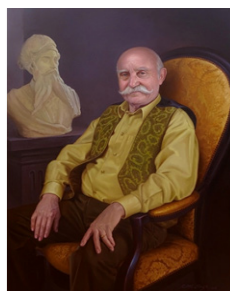
सांस्कृतिक स्मृति

यह पोर्ट्रेट व्यक्तिगत पहचान को सामुदायिक पहचान में परिवर्तित करता है। जस्सा सिंह रामगढ़िया का चित्रण सिख इतिहास और रामगढ़िया परंपरा की स्मृति को दृश्य रूप प्रदान करता है।

इस प्रकार यह कृति Individual Identity → Historical Identity → Collective Memory की प्रक्रिया को प्रदर्शित करती है।

कलात्मक निष्कर्ष

जस्सा सिंह रामगढ़िया का पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह के ऐतिहासिक यथार्थवाद का प्रतिनिधि उदाहरण है। इसमें चेहरे की समानता, ऐतिहासिक वेशभूषा, हथियार, किला, सूर्यास्त, प्रकाश-छाया और प्रतीकात्मकता मिलकर एक वीरतापूर्ण दृश्य आख्यान बनाते हैं।



मिस्टर हेनरी आला का पोर्ट्रेट वर्ष 2017 में Oil on Canvas, 44 × 32 इंच

मिस्टर हेनरी आला का पोर्ट्रेट वर्ष 2017 में Oil on Canvas, 44X32 इंच के आकार में बनाया गया। उपलब्ध विवरण के अनुसार यह हेनरी आला के निजी संग्रह, सेंट ट्रुपे, फ्रांस में सुरक्षित है। यह कृति आर. एम. सिंह की पसंदीदा पेंटिंग्स में विशेष स्थान रखती है क्योंकि इसमें समकालीन व्यक्ति, पारिवारिक इतिहास, पंजाब और फ्रांस के सांस्कृतिक संबंध तथा कला-परंपरा एक साथ जुड़ते हैं।

प्रत्यक्ष सिटिंग और स्टूडियो

कलाकार ने हेनरी आला का पोर्ट्रेट उनके निजी स्टूडियो में बैठकर बनाया। मॉडल के लिए उसी स्टूडियो की ईजी चेयर का प्रयोग किया गया। इससे पोर्ट्रेट में कृत्रिम पृष्ठभूमि के बजाय वास्तविक जीवन-परिवेश का प्रभाव



आता है। व्यक्ति और उसका वातावरण एक ही दृश्य इकाई में बदल जाते हैं।

पारिवारिक इतिहास

हेनरी आला को जनरल जां फ्रांस्वा आला के वंशज के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कलाकार ने इस पारिवारिक संबंध को चित्र में दृश्य रूप देने के लिए जनरल आला की एक बस्ट प्रतिमा को कल्पनात्मक रूप से शामिल किया। यहाँ बस्ट वंश, इतिहास और विरासत का प्रतीक बन जाती है।

पंजाब और फ्रांस का संबंध

कलाकार के विवरण के अनुसार जनरल आला का संबंध महाराजा रणजीत सिंह की सेना से था और उनके पारिवारिक जीवन का संबंध पंजाब तथा फ्रांस दोनों से जुड़ा था। इस प्रकार हेनरी आला का चित्र केवल एक फ्रांसीसी व्यक्ति का पोर्ट्रेट नहीं रह जाता। यह पंजाब और फ्रांस के बीच ऐतिहासिक एवं भावनात्मक संबंध का दृश्य संकेत बनता है।

प्रकाश और पृष्ठभूमि

गहरे पृष्ठभूमि क्षेत्र के सामने प्रकाशित चेहरा और शरीर आकृति को स्पष्ट रूप से उभारते हैं। यह तकनीक आर. एम. सिंह की सामान्य प्रकाश-व्यवस्था से जुड़ती है जिसमें मुख्य आकृति और पृष्ठभूमि के बीच टोनल विरोध स्थापित किया जाता है।

त्वचा-रंग

इस कृति में यूरोपीय त्वचा-रंग के चित्रण की तकनीकी समस्या विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कलाकार ने त्वचा के प्राकृतिक रंग को पकड़ने के लिए अपनी रंग-योजना में परिवर्तन किया और वर्मिलियन रेड जैसे रंग का उपयोग किया। यह कलाकार की observational colour sensitivity को प्रदर्शित करता है— अर्थात् मॉडल के वास्तविक त्वचा-रंग के अनुसार रंग-भाषा को बदलना।

सांस्कृतिक वस्त्र

चित्र में पारंपरिक पोशाक/वस्त्र का प्रयोग हेनरी आला की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का संकेत देता है। आधुनिक स्टूडियो, पारंपरिक वस्त्र और ऐतिहासिक बस्ट का संयोजन चित्र को बहुस्तरीय बनाता है।

कला-ऐतिहासिक आयाम

कलाकार के विवरण में हेनरी आला के परिवार की कला-परंपरा तथा जनरल आला के चित्र को यूरोपीय चित्रकला परंपरा से जोड़ने वाला संदर्भ भी मिलता है। इससे यह पोर्ट्रेट परिवार, इतिहास और कला के पारस्परिक संबंध को प्रस्तुत करता है।

कलात्मक निष्कर्ष

हेनरी आला का पोर्ट्रेट Portrait+Genealogy+Cultural Memory+Art History का संयुक्त उदाहरण है। यह आर. एम. सिंह की उस प्रवृत्ति को दर्शाता है जिसमें व्यक्ति को उसके व्यापक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिवेश से अलग नहीं किया जाता।



सरदार मुख्तार सिंह संधू का पोर्ट्रेट वर्ष 2015 में Oil on Canvas, 30 × 24 इंच

सरदार मुख्तार सिंह संधू का पोर्ट्रेट वर्ष 2015 में Oil on Canvas, 30X24 इंच के आकार में बनाया गया। यह जस्टिस बलवीर सिंह के पारिवारिक संग्रह से संबंधित है। उपलब्ध विवरण के अनुसार मुख्तार सिंह संधू उनके फादर-इन-लॉ थे। कलाकार ने उनके जीवन के अलग-अलग चरणों को प्रस्तुत करते हुए दो पोर्ट्रेट बनाए; प्रस्तुत कृति उनके उत्तरकालीन व्यक्तित्व को दर्शाती है।

फोटोग्राफ से पुनर्निर्माण

इस कृति की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कलाकार ने मॉडल को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा था। उनके पास मुख्यतः ब्लैक एंड व्हाइट फोटोग्राफ उपलब्ध थे। अन्य उपलब्ध रंगीन छवि ने त्वचा, आँखों और रंग-संयोजन को समझने में सहायता की। इस प्रकार कलाकार ने अलग-अलग फोटोग्राफिक स्रोतों की तुलना करके दृश्य व्यक्तित्व का पुनर्निर्माण किया।

लाइफ-साइज फेस

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में Life-Size Face का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। कलाकार के अनुसार सामान्य देखने की दूरी पर चेहरे को वास्तविक जीवन के अनुपात के निकट रखना दर्शक और चित्र के बीच अधिक स्वाभाविक संबंध स्थापित करता है। इस दृष्टिकोण से पोर्ट्रेट को देखने वाला दर्शक केवल चित्र नहीं देखता, बल्कि व्यक्ति की उपस्थिति का अनुभव करता है।

चेहरे की महडलिंग

इस कृति में गाल, नाक, आँखें, भौंहें और त्वचा को अलग-अलग दृश्यात्मक संरचनाओं के रूप में समझकर मॉडल किया गया है। कलाकार के अनुसार प्रत्येक अंग के रूप, आयतन, प्रकाश और छाया को अलग-अलग समझना आवश्यक है। यही कारण है कि चित्र का चेहरा सपाट नहीं बल्कि मूर्तिकला-सदृश दिखाई देने का प्रयास करता है।

दाढ़ी का चित्रण

सफेद दाढ़ी इस पोर्ट्रेट की प्रमुख पहचान है। कलाकार ने सफेद को एक ही टोन में न रखकर विभिन्न ग्रे शेड्स का प्रयोग किया। इससे बालों की दिशा, घनत्व और आयतन का अनुभव उत्पन्न होता है। यह प्रक्रिया पोर्ट्रेट को फोटोग्राफिक विवरण से आगे ले जाकर चित्रात्मक मॉडलिंग प्रदान करती है।

त्वचा और प्रौक्तिक रंग

त्वचा में गुलाबी, पीच और हल्की लालिमा वाले रंगों का उपयोग किया गया है। गाल और नाक के आसपास प्राकृतिक रक्त-संचार की रंगत को संकेतित करने से चेहरा जीवंत बनता है। यहाँ रंग केवल स्थानीय रंग नहीं बल्कि जीवंतता और जैविक उपस्थिति का माध्यम बनता है।

पगड़ी, कहलर और टाई

पगड़ी के फोल्ड्स, कॉलर, टाई और टाई की गाँठ को भी सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। इससे कलाकार की वह धारणा स्पष्ट होती है कि यथार्थवादी पोर्ट्रेट केवल चेहरे तक सीमित नहीं होना चाहिए।

प्रकाश-छाया

चेहरे के प्रकाशित हिस्से के पीछे गहरी पृष्ठभूमि और अपेक्षाकृत गहरे हिस्से के पीछे हल्का टोन रखने से आकृति को दृश्य रूप से अलग किया गया है। यह controlled tonal contrast चेहरे के आयतन और त्रि-आयामी प्रभाव को बढ़ाता है।

व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति



कृति में परिपक्वता, गरिमा और शांत व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास दिखाई देता है। इस प्रकार चित्र का यथार्थवाद केवल चेहरे की समानता नहीं बल्कि personality resemblance की दिशा में जाता है।

कलात्मक निष्कर्ष

सरदार मुख्तार सिंह संधू का पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की तकनीकी दक्षता का अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसमें फोटोग्राफिक संदर्भ, जीवन-सदृश चेहरे का अनुपात, सूक्ष्म मॉडलिंग, त्वचा के रंग, दाढ़ी की संरचना, वेशभूषा तथा नियंत्रित प्रकाश-छाया एक साथ काम करते हैं।



4. प्रोफेसर जी. एस. मान का पोर्ट्रेट लगभग 30X24 इंच, वस वद बंदों वर्ष

प्रोफेसर जी. एस. मान का पोर्ट्रेट लगभग 30X24 इंच, Oil on Canvas माध्यम में निर्मित है। यह प्रोफेसर जी. एस. मान के निजी संग्रह में सुरक्षित बताया गया है। यह पोर्ट्रेट केवल व्यक्ति के चेहरे को चित्रित करने के बजाय उनके शांत, सरल, विनम्र और पंजाब की कला-संस्कृति के प्रति समर्पित व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करता है।

प्रत्यक्ष अध्ययन

कलाकार ने प्रोफेसर जी. एस. मान के साथ बैठकर चित्र की शुरुआत की। प्रारंभिक सिटिंग होटल शिवालिक व्यू में हुई। सीमित उपलब्ध समय के कारण अलग-अलग सिटिंग्स के माध्यम से चित्र आगे बढ़ा और लगभग दो से तीन वर्षों में पूर्ण हुआ। यह प्रक्रिया बताती है कि कलाकार के लिए पोर्ट्रेट निर्माण एक त्वरित प्रतिलिपि नहीं बल्कि लंबे अवलोकन और क्रमिक दृश्य समझ की प्रक्रिया हो सकती है।

वस्त्रों का यथार्थवाद

सफेद कुर्ता-पायजामा और नेहरू जैकेट को केवल सपाट सफेद रंग से नहीं बनाया गया। ग्रे और सफेद के विभिन्न टोन के माध्यम से कपड़े की सिलवटों, प्रकाश और आयतन को प्रस्तुत किया गया। इससे वस्त्र भी चेहरे की तरह त्रि-आयामी दृश्य इकाई में बदल जाते हैं।

प्रौक्तिक प्रकाश

कमरे की खिड़की से आने वाली प्राकृतिक दिन की रोशनी को एकल प्रकाश स्रोत की तरह उपयोग किया गया। चेहरे का एक भाग प्रकाश में और दूसरा अपेक्षाकृत छाया में रखा गया। इससे चेहरे की मॉडलिंग और आयतन प्रभावशाली बनते हैं।

गहरी पृष्ठभूमि

हल्की त्वचा और सफेद वस्त्रों को गहरे पृष्ठभूमि-टोन के सामने रखा गया। यह आर. एम. सिंह की प्रकाश-रचना का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इस विरोध के कारण आकृति पृष्ठभूमि से अलग होकर दृश्य केंद्र बन जाती है।

कुसएँ का सांरेंतिक अर्थ

इस कृति की विशेषता पृष्ठभूमि में प्रयुक्त कुर्सी है। कलाकार ने आधुनिक कुर्सी के स्थान पर ऐसी कुर्सी का चयन किया जिसमें पंजाबी लकड़ी के शिल्प और पारंपरिक नक्काशी की स्मृति दिखाई देती है। इस प्रकार एक सामान्य वस्तु भी सांस्कृतिक प्रतीक में बदल जाती है।

मनोवैज्ञानिक चित्रण

चेहरे पर अतिनाटकीयता के बजाय शांत और संयमित भाव रखे गए हैं। यह प्रोफेसर जी. एस. मान के सौम्य व्यक्तित्व को व्यक्त करने का माध्यम बनता है। इस दृष्टि से यह कृति Psychological Portraiture का उदाहरण है।

कलात्मक निष्कर्ष

प्रोफेसर जी. एस. मान का पोर्ट्रेट व्यक्ति, संस्कृति और परिवेश के बीच संबंध स्थापित करता है। इसमें प्राकृतिक प्रकाश, सफेद वस्त्र, गहरी पृष्ठभूमि, पारंपरिक कुर्सी और शांत मुखाभिव्यक्ति मिलकर पंजाब की सांस्कृतिक चेतना से जुड़े व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।



5. गुरु हरेंश महा राज जी का पोर्ट्रेट लगभग 30X24 इंच, वस वद बंदअं वर्ष 2026

गुरु हरकृष्ण महाराज जी का पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की कला में एक विशिष्ट प्रकार का धार्मिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तिचित्र प्रस्तुत करता है। यह कृति अन्य पोर्ट्रेट्स से इसलिए अलग है क्योंकि इसका उद्देश्य केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व की दृश्य समानता नहीं बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करना है।

प्रेरणा

कलाकार के अनुसार इस कृति की प्रेरणा अरदास की प्रसिद्ध पंक्ति "गुरु हरकृष्ण जी धिआइए, जिस डिते सभ दुख जाए" कृसे जुड़ी है।

कलाकार का प्रश्न था कि यदि गुरु हरकृष्ण साहिब के दर्शन को दुख दूर करने वाली आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ा जाता है, तो उनके चित्र में भी शांति, आनंद और शक्ति का अनुभव होना चाहिए।

बाल स्वरूप

गुरु हरकृष्ण महाराज जी को बाल स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। चुनौती यह थी कि बालक की मासूमियत और गुरु स्वरूप की आध्यात्मिक गरिमा दोनों को एक साथ बनाए रखा जाए। इस प्रकार चेहरा शारीरिक रूप से बाल-सुलभ है, परंतु भावात्मक रूप से अधिक गहराई और शांति व्यक्त करता है।

आंखों की अभिव्यक्ति

इस कृति में आँखें सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक तत्व हैं। कलाकार ने उनमें बाहरी और आंतरिक दृष्टि दोनों की अनुभूति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से आँखें केवल शरीर का अंग नहीं बल्कि आध्यात्मिक चेतना का माध्यम बन जाती हैं।

पंजाबी चेहरे की विशेषताएँ

कलाकार ने बाल स्वरूप के साथ पंजाबी चेहरे के नैन-नक्श को भी महत्व दिया है। इससे गुरु स्वरूप को एक विशिष्ट स्थानीय सांस्कृतिक पहचान मिलती है।



आकाश का प्रतीक

पृष्ठभूमि में आकाश का प्रयोग गुरु स्वरूप की विशालता और आध्यात्मिक अनंतता को व्यक्त करने के लिए किया गया है। आकाश यहाँ केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं बल्कि अनंतता, व्यापकता और आध्यात्मिक महिमा का प्रतीक बनता है।

स्वप्निल रंग

आकाश में सामान्य प्राकृतिक रंगों के बजाय स्वप्निल और कतमंडल रंगों का प्रयोग चित्र को सामान्य यथार्थवाद से आगे ले जाता है। इससे एक ऐसी दृश्य-भावभूमि निर्मित होती है जिसमें यथार्थवादी चेहरा और आध्यात्मिक वातावरण साथ-साथ कार्य करते हैं।

वस्त्र और कलगी

पगड़ी, कलगी, मोतियों की माला और पारंपरिक अंगरखा गुरु स्वरूप की ऐतिहासिक एवं पारिवारिक विरासत को संकेतित करते हैं। यहाँ वस्त्र धार्मिक पहचान के साथ ऐतिहासिक गरिमा का भी संकेत देते हैं।

यथार्थवाद और आध्यात्मिकता

यह कृति आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में चपतपजनस त्मसपेउ की अवधारणा को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है। चेहरे की संरचना, बाल स्वरूप और वस्त्रों में यथार्थवाद है, जबकि आँखें, प्रकाश, आकाश और रंग आध्यात्मिक अनुभव उत्पन्न करते हैं।

कलात्मक निष्कर्ष

गुरु हरकृष्ण महाराज जी का पोर्ट्रेट कलाकार की धार्मिक-सांस्कृतिक संवेदना और यथार्थवादी तकनीक के समन्वय को प्रदर्शित करता है। यह कृति दृश्य समानता से आगे बढ़कर भावात्मक समानता स्थापित करने का प्रयास करती है।

चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट्स का तुलनात्मक विश्लेषण

पोर्ट्रेट	वर्ष	माध्यम/आकार	प्रमुख दृष्टिकोण	मुख्य विशेषता
जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया	लगभग 2001	Oil on Canvas, 30 x 24 इंच	ऐतिहासिक यथार्थवाद	वीरता, प्रकाश-स्तंभ, सामुदायिक स्मृति
मिस्टर हेनरी आला	2017	Oil on Canvas, 44 x 32 इंच	सांस्कृतिक-ऐतिहासिक यथार्थवाद	वंश, पंजाब-फ्रांस संबंध, स्टूडियो परिवेश
सरदार मुख्तार सिंह संधू	2015	Oil on Canvas, 30 x 24 इंच	तकनीकी/मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद	लाइफ-साइज फेस, दाढ़ी, त्वचा और मॉडलिंग
प्रोफेसर जी. एस. मान	उपलब्ध विवरणानुसार	Oil on Canvas, लगभग 30 x 24 इंच	मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक यथार्थवाद	शांत व्यक्तित्व, पंजाबी शिल्प-संदर्भ
गुरु हरकृष्ण महाराज जी	—2026	Oil on Canvas, लगभग 30 x 24 इंच	आध्यात्मिक यथार्थवाद	बाल स्वरूप, आँखें, आकाश और आध्यात्मिक आभा

तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो इन पाँचों कृतियों में कलाकार की मूल तकनीकी भाषा समान है, परंतु प्रत्येक विषय के अनुसार उसकी वैचारिक दिशा बदल जाती है। जस्सा सिंह रामगढ़िया में वीरता प्रमुख है, हेनरी आला में वंश और इतिहास, मुख्तार सिंह संधू में चेहरे की तकनीकी मॉडलिंग, जी. एस. मान में शांत व्यक्तित्व और सांस्कृतिक पहचान तथा गुरु हरकृष्ण महाराज जी में आध्यात्मिक अनुभूति केंद्रीय बनती है।

माध्यम और तकनीक का विश्लेषण

आर. एम. सिंह की चयनित कृतियों में वृष वद बंदों प्रमुख माध्यम है। तेल रंग कलाकार को त्वचा के सूक्ष्म टोन, प्रकाश-छाया के संक्रमण, कपड़ों की बनावट और चेहरे की मॉडलिंग में व्यापक नियंत्रण प्रदान करते हैं। उनकी तकनीक में रंग को केवल सतही भराव की तरह नहीं बल्कि रूप और आयतन के निर्माण के लिए प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से चेहरे के गाल, नाक, आँखों और दुडू जैसे क्षेत्रों में प्रकाश और छाया का क्रमिक संक्रमण चेहरे को त्रि-आयामी बनाता है। उनकी पद्धति में पृष्ठभूमि भी महत्वपूर्ण तकनीकी भूमिका निभाती है। हल्के चेहरे के पीछे गहरा टोन रखने से आकृति उभरती है। इस तकनीक को उनके अनेक पोर्ट्रेट्स में देखा जा सकता है।

प्रकाश-छाया का विश्लेषण

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में प्रकाश केवल वस्तुओं को देखने योग्य बनाने का माध्यम नहीं है। वह रूप, व्यक्तित्व और अर्थ को नियंत्रित करने वाला दृश्य उपकरण है। जस्सा सिंह रामगढ़िया में प्रकाश वीरता और प्रेरणा का प्रतीक बनता है। हेनरी आला में प्रकाश व्यक्ति को गहरे स्टूडियो परिवेश से अलग करता है। मुख्तार सिंह संधू में प्रकाश चेहरे की मॉडलिंग को उभारता है। जी. एस. मान में प्राकृतिक खिड़की का प्रकाश शांत और वास्तविक वातावरण बनाता है। गुरु हरकृष्ण महाराज जी में प्रकाश आध्यात्मिक आभा का अनुभव बढ़ाता है। इस प्रकार एक ही तकनीकी सिद्धांत अलग-अलग विषयों में अलग अर्थ प्राप्त करता है।

रंग-संयोजन का विश्लेषण

आर. एम. सिंह रंग को व्यक्तित्व और दृश्य केंद्र निर्धारित करने के लिए उपयोग करते हैं। जस्सा सिंह रामग. ढिया में सफेद, केसरी और नीले रंग गहरे आकाश के साथ विरोध बनाते हैं। हेनरी आला में त्वचा की यूरोपीय रंगत को पकड़ने के लिए रंग-योजना में विशेष परिवर्तन किया गया। मुख्तार सिंह संधू के चेहरे में गुलाबी, पीच और लालिमा वाले टोन जीवंतता उत्पन्न करते हैं। जी. एस. मान के सफेद वस्त्र गहरी पृष्ठभूमि के सामने स्पष्ट होते हैं। गुरु हरकृष्ण महाराज जी के reddish-orange वस्त्र और स्वर्णिल आकाश मिलकर आध्यात्मिक वातावरण बनाते हैं। इस प्रकार कलाकार के यहाँ रंग केवल प्राकृतिक रंग की नकल नहीं बल्कि composition meaning दोनों का निर्माण करते हैं।

पृष्ठभूमि का कार्य

इन पोर्ट्रेट्स के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर. एम. सिंह पृष्ठभूमि को कभी भी पूरी तरह निष्क्रिय नहीं रखते। जस्सा सिंह रामगढ़िया के पीछे किला और आकाश ऐतिहासिक वातावरण बनाते हैं। हेनरी आला के चित्र में स्टूडियो पारिवारिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ा है। जी. एस. मान की पृष्ठभूमि में कुर्सी और कमरे की रेखाएँ पंजाबी सांस्कृतिक पहचान का संकेत देती हैं। गुरु हरकृष्ण महाराज जी के पीछे आकाश आध्यात्मिक अनंतता का प्रतीक बनता है। इससे स्पष्ट होता है कि कलाकार के लिए Background + Context + Atmosphere + Symbolism है।

यथार्थवाद की अवधारणा

आर. एम. सिंह का यथार्थवाद केवल बाहरी समानता नहीं है। इसे चार स्तरों में समझा जा सकता है—
पहला—शारीरिक यथार्थवाद: चेहरे, शरीर, त्वचा और वेशभूषा की सटीकता।
दूसरा—दृश्य यथार्थवाद: प्रकाश, छाया, रंग और स्थान का प्राकृतिक प्रभाव।
तीसरा—मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद: चेहरे के भावों के माध्यम से व्यक्तित्व और स्वभाव को व्यक्त करना।
चौथा—संदर्भात्मक यथार्थवाद: व्यक्ति को उसके इतिहास, संस्कृति, परिवेश या आध्यात्मिक संदर्भ में स्थापित करना।

इस वर्गीकरण के आधार पर आर. एम. सिंह की कला को केवल चैवजवतमंसपेउ कहना पर्याप्त नहीं होगा। उनका यथार्थवाद संदर्भ और व्यक्तित्व की व्याख्या से जुड़ा हुआ है।



पसंदीदा पोर्ट्रेट्स और कलाकार की व्यक्तिगत संवेदना

इन कृतियों को कलाकार की पसंदीदा पेंटिंग्स के रूप में देखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे उनकी कलात्मक प्राथमिकताओं का अनुमान लगाया जा सकता है।

जस्सा सिंह रामगढ़िया में ऐतिहासिक वीरता और प्रतीकात्मक प्रकाश कलाकार को आकर्षित करता है। हेनरी आला में व्यक्तिगत संबंध, पारिवारिक इतिहास और पंजाब-फ्रांस की स्मृति महत्वपूर्ण है। मुख्तार सिंह संधू में कलाकार को चेहरे की जीवंतता और तकनीकी मॉडलिंग विशेष रूप से प्रिय है। जी. एस. मान में तकनीकी गुणवत्ता के साथ व्यक्तिगत आत्मीयता जुड़ी है। गुरु हरकृष्ण महाराज जी में आध्यात्मिक भाव और कलाकार की वैचारिक कल्पना केंद्रीय है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कलाकार की पसंद केवल तकनीकी उत्कृष्टता पर आधारित नहीं है। व्यक्तिगत भावनात्मक संबंध, विषय की ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक अर्थ और कलाकार की वैचारिक संतुष्टि भी उनकी पसंद को निर्धारित करते हैं।

कलाकार की पोर्ट्रेट कला में ऐतिहासिकता

ऐतिहासिक पोर्ट्रेट आर. एम. सिंह की कला में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। संसद भवन तथा राष्ट्रपति भवन के लिए बनाए गए पोर्ट्रेट उनके पेशेवर जीवन की संस्थागत उपलब्धियों को दर्शाते हैं। कलाकार के लिए ऐसे पोर्ट्रेट आर्थिक कार्य से आगे बढ़कर कलात्मक सम्मान का विषय हैं। जस्सा सिंह रामगढ़िया और गुरु हरकृष्ण महाराज जी जैसे विषय ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्मृति से जुड़े हैं, जबकि हेनरी आला का पोर्ट्रेट पारिवारिक इतिहास और पंजाब-फ्रांस संबंध को दृश्य रूप देता है। इस प्रकार कलाकार की पोर्ट्रेट कला इतिहास को केवल पीछे की जानकारी के रूप में नहीं रखती; वह इतिहास को चित्र की दृश्य संरचना में शामिल करती है।

पोर्ट्रेट और सांस्कृतिक स्मृति

चयनित कृतियों का एक महत्वपूर्ण साझा पक्ष Cultural Memory है। जस्सा सिंह रामगढ़िया सामुदायिक वीरता और सिख सैन्य इतिहास की स्मृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। हेनरी आला के माध्यम से पंजाब और फ्रांस के बीच बहु-पीढ़ीय पारिवारिक स्मृति दिखाई देती है। जी. एस. मान का चित्र पंजाब की कला और संस्कृति के प्रति उनकी रुचि को दृश्य संदर्भ देता है। गुरु हरकृष्ण महाराज जी का चित्र धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्मृति को दृश्य रूप देता है। इस प्रकार आर. एम. सिंह के पोर्ट्रेट व्यक्तियों को उनके सामाजिक और सांस्कृतिक समुदायों से जोड़ते हैं।

पोर्ट्रेट और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

कलाकार की पोर्ट्रेट कला में मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति विशेष महत्व रखती है। वे चेहरे को केवल anatomical structure नहीं मानते, बल्कि उसे व्यक्तित्व का माध्यम बनाते हैं। मुख्तार सिंह संधू में गंभीरता और गरिमा, जी. एस. मान में शांति और सरलता, जस्सा सिंह रामगढ़िया में दृढ़ता और वीरता तथा गुरु हरकृष्ण महाराज जी में शांति और आध्यात्मिकता चेहरे के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार Face + Identity + Emotion + Personality का सिद्धांत कलाकार की कला में स्पष्ट दिखाई देता है।

ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पोर्ट्रेट में अंतर

जस्सा सिंह रामगढ़िया और गुरु हरकृष्ण महाराज जी के पोर्ट्रेट का तुलनात्मक अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जस्सा सिंह रामगढ़िया के चित्र में ऐतिहासिकता को किला, हथियार, वेशभूषा, सूर्यास्त और प्रकाश के माध्यम से व्यक्त किया गया है। वहीं गुरु हरकृष्ण महाराज जी के चित्र में आध्यात्मिकता आँखों, आकाश, स्वप्निल रंगों और शांत चेहरे के माध्यम से व्यक्त होती है। पहले चित्र में प्रकाश का अर्थ वीरता और प्रेरणा है, जबकि दूसरे में प्रकाश का अर्थ आध्यात्मिक शांति और आभा है। इस प्रकार समान चित्रात्मक साधन अलग-अलग विषयों में अलग वैचारिक अर्थ उत्पन्न करते हैं।

प्रत्यक्ष मॉडल और फोटोग्राफिक संदर्भ

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट प्रक्रिया में दो प्रमुख कार्य—पद्धतियाँ दिखाई देती हैं। पहली, स्पअमैपजजपदह, जिसमें कलाकार मॉडल के सामने बैठकर प्रत्यक्ष अवलोकन करता है। हेनरी आला और प्रोफेसर जी. एस. मान इसके प्रमुख उदाहरण हैं। दूसरी, Photographic Reconstruction, जिसमें उपलब्ध फोटोग्राफ के आधार पर चित्र तैयार किया जाता है। सरदार मुख्तार सिंह संधू का पोर्ट्रेट इसका प्रमुख उदाहरण है। इन दोनों स्थितियों में कलाकार का लक्ष्य केवल फोटो की नकल करना नहीं बल्कि व्यक्ति की दृश्य उपस्थिति को पुनर्स्थापित करना है।

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में मूर्तिकला-सहश दृष्टि

मुख्तार सिंह संधू के पोर्ट्रेट में कलाकार चेहरे की मॉडलिंग की तुलना मूर्तिकार द्वारा आकृति को तराशने से करते हैं। यह तुलना उनके यथार्थवाद की प्रकृति समझने में महत्वपूर्ण है। चेहरे के प्रत्येक भाग को आयतन के रूप में देखना—गाल का उभार, नाक की संरचना, आँखों की गहराई, ठुड़ी का आकार—चित्र को सपाट सतह से उठाकर त्रि-आयामी अनुभव प्रदान करता है। इस दृष्टि से आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला में चित्रकला और मूर्तिकला की दृश्य सोच के बीच एक रोचक संबंध दिखाई देता है।

कलाकार की पेशेवर प्रतिष्ठा और पोर्ट्रेट कला

आर. एम. सिंह की कला—यात्रा व्यक्तिगत अभ्यास से राष्ट्रीय संस्थागत पहचान तक पहुँची। संसद भवन और राष्ट्रपति भवन के लिए पोर्ट्रेट बनाना उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कलाकार स्वयं उच्च-प्रोफ़ाइल पोर्ट्रेट्स को केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं मानते, बल्कि कलात्मक सम्मान और सामाजिक मान्यता के रूप में देखते हैं। यह दृष्टिकोण उनकी पोर्ट्रेट कला के महत्व को कला-बाजार से आगे ले जाता है। उनके अनुसार छोटे हेड-एंड-शोल्डर पोर्ट्रेट से लेकर फुल-लेंथ पोर्ट्रेट तक मूल्य में अंतर होता है और बड़े ऐतिहासिक/युद्ध-आधारित चित्रों का मूल्य बहुत अधिक हो सकता है। आर. एम. सिंह की कला-शैली की प्रमुख विशेषताएँ

चयनित पोर्ट्रेट्स के विश्लेषण के आधार पर उनकी कला-शैली की निम्न प्रमुख विशेषताएँ स्थापित होती हैं—

पहली विशेषता—रेखांकन की मजबूती। चेहरा और शरीर सही अनुपात में स्थापित करने के लिए ड्राइंग को आधार माना गया है। दूसरी—यथार्थवादी मॉडलिंग। प्रकाश और छाया के क्रमिक संक्रमण से चेहरे को आयतन दिया जाता है। तीसरी—प्राकृतिक त्वचा-रंग। त्वचा को एक सपाट स्थानीय रंग के रूप में नहीं बल्कि अनेक सूक्ष्म रंगों के संयोजन के रूप में देखा जाता है। चौथी—नियंत्रित पृष्ठभूमि। पृष्ठभूमि मुख्य आकृति को उभारने के लिए कार्य करती है। पाँचवीं—प्रकाश का वैचारिक उपयोग। प्रकाश कभी यथार्थवादी मॉडलिंग, कभी वीरता और कभी आध्यात्मिकता का प्रतीक बनता है। छठी—परिवेश की भूमिका। स्टूडियो, कुर्सी, किला, आकाश या पारंपरिक वस्त्र विषय के अर्थ को विस्तृत करते हैं। सातवीं—मनोवैज्ञानिक उपस्थिति। कलाकार व्यक्ति के स्वभाव और आंतरिक गुणों को चेहरे के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

पसंदीदा पोर्ट्रेट्स से उभरती कलाकार की वैचारिक प्रवृत्तियाँ

इन कृतियों का अध्ययन यह संकेत देता है कि आर. एम. सिंह की पसंदीदा पेंटिंग्स को तीन प्रमुख श्रेणियों में समझा जा सकता है।

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पोर्ट्रेट

जस्सा सिंह रामगढ़िया और हेनरी आला के चित्र इस श्रेणी में आते हैं। यहाँ व्यक्ति का इतिहास और सांस्कृतिक संदर्भ चित्र की संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मनोवैज्ञानिक-यथार्थवादी पोर्ट्रेट

सरदार मुख्तार सिंह संधू और प्रोफेसर जी. एस. मान के चित्रों में व्यक्ति के चेहरे, स्वभाव, गरिमा और जीवनानुभव को प्राथमिकता दी गई है।



आध्यात्मिक पोर्ट्रेट

गुरु हरकृष्ण महाराज जी का चित्र इस श्रेणी का उदाहरण है, जहाँ शारीरिक यथार्थवाद के साथ आध्यात्मिक अनुभूति को दृश्य रूप दिया गया है। इन तीनों श्रेणियों के बीच कलाकार की मूल यथार्थवादी भाषा एक साझा आधार प्रदान करती है।

शोध से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से पहला प्रमुख निष्कर्ष यह निकलता है कि आर. एम. सिंह का यथार्थवाद केवल बाहरी समानता पर आधारित नहीं है। वे व्यक्ति की दृश्य पहचान के साथ उसके व्यक्तित्व और संदर्भ को भी चित्रित करते हैं। दूसरा निष्कर्ष यह है कि उनकी पोर्ट्रेट कला में प्रकाश और पृष्ठभूमि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों मिलकर आकृति की दृश्य शक्ति और अर्थ को नियंत्रित करते हैं। तीसरा निष्कर्ष यह है कि कलाकार के लिए ड्राइंग पोर्ट्रेट की आधारभूत संरचना है। चेहरे की सही anatomy के बिना यथार्थवादी प्रभाव प्राप्त नहीं किया जा सकता। चौथा निष्कर्ष यह है कि त्वचा के रंग और सूक्ष्म टोन कलाकार की तकनीकी दक्षता का महत्वपूर्ण पक्ष हैं। पाँचवाँ निष्कर्ष यह है कि कलाकार विषय की सांस्कृतिक पहचान को वेशभूषा, फर्नीचर, हथियार, स्थापत्य और पृष्ठभूमि के माध्यम से चित्र में शामिल करते हैं। छठा निष्कर्ष यह है कि कलाकार के पसंदीदा चित्रों में व्यक्तिगत भावनात्मक संबंध की महत्वपूर्ण भूमिका है। सातवाँ निष्कर्ष यह है कि ऐतिहासिक पोर्ट्रेट में कलाकार साहित्य और संदर्भ—अध्ययन को आवश्यक मानते हैं। आठवाँ निष्कर्ष यह है कि फोटोग्राफिक संदर्भ उपलब्ध होने पर भी कलाकार उसका यांत्रिक अनुकरण नहीं करते, बल्कि उससे व्यक्तित्व का चित्रात्मक पुनर्निर्माण करते हैं। नौवाँ निष्कर्ष यह है कि आर. एम. सिंह की कला में पोर्ट्रेट एक प्रकार का Visual Biography बन जाता है— अर्थात् व्यक्ति के जीवन, इतिहास, परिवेश और पहचान का दृश्य आख्यान। दसवाँ और सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि उनकी चयनित पसंदीदा कृतियाँ Historical Realism, Psychological Realist, Cultural Realism और Spiritual Realism के विभिन्न रूपों को एक ही कलात्मक परंपरा में जोड़ती हैं।

आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला का समग्र मूल्यांकन

आर. एम. सिंह की कला—यात्रा को उनके प्रारंभिक रेलवे स्टेशन स्केचों से लेकर संसद भवन और राष्ट्रपति भवन के आधिकारिक पोर्ट्रेट्स तक देखने पर स्पष्ट होता है कि पोर्ट्रेट उनके लिए केवल पेशेवर कार्य नहीं बल्कि दीर्घकालीन साधना का परिणाम है। उनके प्रारंभिक त्वरित स्केचों ने प्रत्यक्ष अवलोकन की क्षमता विकसित की, औपचारिक कला शिक्षा ने तकनीकी आधार प्रदान किया और स्वतंत्र कलाकार के रूप में लंबे पेशेवर अनुभव ने उनकी शैली को परिपक्व बनाया। उनकी चयनित पसंदीदा पेंटिंग्स इस विकास की अलग-अलग अवस्थाओं और विचारों को सामने लाती हैं। जस्सा सिंह रामगढ़िया में ऐतिहासिक वीरता, हेनरी आला में वंश और सांस्कृतिक संपर्क, मुख्तार सिंह संधू में तकनीकी यथार्थवाद, जी. एस. मान में सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहचान तथा गुरु हरकृष्ण महाराज जी में आध्यात्मिक अनुभूति प्रमुख हैं। इन सभी कृतियों में कलाकार की तकनीकी भाषा—ड्राइंग, ऑयल कलर, प्रकाश—छाया, त्वचा की मॉडलिंग, पृष्ठभूमि नियंत्रण और रंग—संतुलन—एक आधारभूत निरंतरता बनाए रखती है। विषय बदलने पर अर्थ बदलता है, परंतु चित्रात्मक अनुशासन बना रहता है।

निष्कर्ष

आर. एम. सिंह (राही महिंदर सिंह) की पोर्ट्रेट कला का अध्ययन यह स्थापित करता है कि उनकी कला में यथार्थवाद केवल दृश्य प्रतिकृति नहीं बल्कि व्यक्ति की उपस्थिति, व्यक्तित्व, इतिहास, संस्कृति और भावात्मक अर्थ का पुनर्निर्माण है। जनरल जस्सा सिंह रामगढ़िया का चित्र ऐतिहासिक वीरता और सामुदायिक स्मृति का दृश्य प्रतीक बनता है। मिस्टर हेनरी आला का पोर्ट्रेट वंश, पारिवारिक इतिहास और पंजाब—फ्रांस के सांस्कृतिक संबंध को दृश्य आख्यान में बदलता है। सरदार मुख्तार सिंह संधू का पोर्ट्रेट कलाकार की सूक्ष्म तकनीकी मॉडलिंग, लाइफ—साइज फेस और त्वचा तथा बालों के यथार्थवादी चित्रण की दक्षता को दर्शाता है। प्रोफेसर जी. एस. मान का चित्र शांत व्यक्तित्व, प्रत्यक्ष अवलोकन और पंजाबी सांस्कृतिक संकेतों का संयोजन प्रस्तुत करता है। गुरु हरकृष्ण महाराज जी

का पोर्ट्रेट यथार्थवाद को आध्यात्मिक अनुभूति के साथ जोड़कर एक विशिष्ट आध्यात्मिक व्यक्तिचित्र की अवधारण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार आर. एम. सिंह की पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स को एक साथ देखने पर उनकी कला का एक व्यापक सूत्र सामने आता है—“चेहरे की समानता से व्यक्तित्व की समानता और व्यक्तित्व की समानता से सांस्कृतिक/ऐतिहासिक अर्थ की ओर बढ़ना।” उनकी कला—यात्रा यह भी दर्शाती है कि पोर्ट्रेट कला में तकनीकी दक्षता और विषय की गहरी समझ एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। प्रारंभिक स्केचिंग से विकसित अवलोकन-क्षमता, औपचारिक कला शिक्षा, स्वतंत्र पेशेवर अनुभव तथा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के कमीशन ने उनके पोर्ट्रेट अभ्यास को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की। संसद भवन और राष्ट्रपति भवन जैसे संस्थागत संदर्भों में उनका कार्य इस पेशेवर प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण प्रमाण है। शोध के संदर्भ में आर. एम. सिंह की चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स को “यथार्थवादी पोर्ट्रेट, व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति, ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति” के अंतर्संबंध के महत्वपूर्ण केस स्टडी के रूप में स्थापित किया जा सकता है। विशेष रूप से इन कृतियों से यह समझने में सहायता मिलती है कि समकालीन भारतीय पोर्ट्रेट चित्रकार किस प्रकार पारंपरिक यथार्थवादी तकनीक को आधुनिक व्यक्तिगत, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अर्थों के साथ जोड़ सकता है। अंततः आर. एम. सिंह की पोर्ट्रेट कला व्यक्ति को केवल कैनवास पर उपस्थित नहीं करती, बल्कि उसे समय, समाज, स्मृति, इतिहास और संस्कृति के भीतर पुनर्स्थापित करती है। यही विशेषता उनकी चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स को एक सामान्य व्यक्तिचित्र से आगे बढ़ाकर शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण दृश्य दस्तावेज और सांस्कृतिक आख्यान बनाती है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रंथ-सूची-

1. आनंद, सिमरनप्रीत कौर. (2024). यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन,।
2. बानो, रुना शेलिन. (2018). बंगाल के प्रगतिशील कला आंदोलन का एक आलोचनात्मक अध्ययन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय।
3. भंडारी, करुणा. (2018). पंजाब के आधुनिक चित्रकारों का अध्ययन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला,।
4. दिंकर, निहारिका. (2014). निजी जीवन और आंतरिक स्थान, राजा रवि वर्मा के विद्वान पुरुषों के चित्र, बोइस स्टेट यूनिवर्सिटी।
5. ग्रेवाल, अनंतदीप. (2018). आधुनिक भारतीय चित्रकला पर आलोचनात्मक लेखन, लगभग 1900–1970 ई., पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़,।
6. गुप्ता, सियान. (2018). बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में सिख दृश्य संस्कृति का अध्ययन, विश्वविद्यालय का विवरण उपलब्ध नहीं,।
7. मुखर्जी, किंगशुक. (2017). प्राचीन भारतीय चित्रकला का उत्तर-औपनिवेशिक भारतीय फैशन एवं जीवन-शैली पर प्रभाव और प्रभावशीलता का अध्ययन, बनस्थली विद्यापीठ,।
8. रानी, सरोज. (2001). पंजाब के यथार्थवादी कलाकार (Realist artists of Punjab)।
9. साहू, टीकेन्द्र कुमार. (2018). भारत में समकालीन उभार कला (Embossing art) की प्रथाएँ, एक अन्वेषणात्मक अध्ययन, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,।
10. शेट, शिवाजी मुकुंद. (2016). भारतीय ओलियोग्राफी, जनसंचार, तकनीकी एवं आलोचनात्मक अध्ययन की ओर एक दृष्टिकोण, विश्व-भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन,।
11. सिंह, कविता. (2012). सिख कैलेंडर कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला,।
12. सिंह, प्रीतपाल. (2026). राजा रवि वर्मा और सोभा सिंह के ओलियोग्राफ का तुलनात्मक अध्ययन; विश्वविद्यालय।
13. ताहमणकर, कौमुदी वासुदेव. (2017). ग्राफिक कला का इतिहासरू बीसवीं शताब्दी में पंजाब और चंडीगढ़ में मुद्रण कला, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़,।
14. तावमणकर, कौमुदी. (2017). बीसवीं सदी में पंजाब और चंडीगढ़ में ग्राफिक आर्ट प्रिंटमेकिंग का इतिहास, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़,।
15. वर्मा, आकांक्षा. (2015). समकालीन भारतीय कला चित्रकला में रामायण और महाभारत का अध्ययन, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
16. यूसुफ, अल्मास. (2020). समकालीन भारतीय कला में महिलाओं का चित्रण, कलाकार और उनके कला-दर्शन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,।



17. औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत सांस्कृतिक उत्पादन, आधुनिक आंध्र में चित्रकला के विकास का अध्ययन (1900–1947).
18. दत्त, यति. (2022). मानव आकृतियों पर आधारित अनुपम सूद द्वारा पुनर्सृजित एचिंग प्रिंटों का अध्ययन, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब।
20. सिंह, कविता. (2019, नवंबर). गुरु नानक देव जी के प्रतीक चित्रों का एक अध्ययन पत्रिका और पृष्ठ संख्या का विवरण उपलब्ध नहीं।
21. सिंह, कविता. (2020, दिसंबर). गुरु तेग बहादुर जी के जीवन की दृष्टिगत कथाओं का अध्ययन। ज्ञानकोश, एक अंतर-अनुशासनात्मक जर्नल, 3।
22. (ग) समाचार-पत्र एवं पत्रिका के लेख
23. जोशी, संदीप. (2020, 9 अक्टूबर). कला का राही पिंड से राष्ट्रपति भवन पहुँचा। दैनिक ट्रिब्यून।
24. कपूर, डी. एस. (2019, 1 दिसंबर). राही मोहिंदर सिंह, राजसी पोर्ट्रेट पेंटर। द ट्रिब्यून।
25. कपूर, डी. एस. (2020, 31 अगस्त). सरदार मेहर सिंह, जादुई पोर्ट्रेट पेंटर। द ट्रिब्यून।
26. सिंह, नोनिका. (तिथि उपलब्ध नहीं)। ब्रश विद सिख हिस्ट्री। द ट्रिब्यून।
27. सिंह, उजागर. (2017, 20 मई). शोख रंगों का जादूगर। पंजाबी ट्रिब्यून।
28. (घ) पुस्तकें एवं प्रकाशित ग्रंथ
29. अरोड़ा, सुमित डी. (2016). द थर्ड नानक, गुरु अमर दास। सात्त्विक बुक्स।
30. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1966). सिखों की पेंटिंग्स। प्रकाशक का विवरण उपलब्ध नहीं।
31. अजीज, केसरी सिंह. (2003). पंजाब के उधे चित्रकार। रवि साहित्य प्रकाशन।
32. बाजपेयी, पोरुर राजेंद्र. (1971). आधुनिक कला। साहित्य निकेतन।
33. भंवर, हरबीर सिंह. (2019). कलाकारों की धरती अंद्रेटा। चेतना प्रकाशन समूह।
34. चित्रकार, अजायब. (1995). पंजाबी चित्रकार। प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय।
35. होइर, कुलवंत सिंह. (1995). सोभा सिंह कलाकार। प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय।

Cite this Article

"विनोद कुमार; डॉ. यति दत्त", "आर. एम. सिंह (राही मोहिंदर सिंह) की यथार्थवादी पोर्ट्रेट कला-चयनित पसंदीदा पोर्ट्रेट पेंटिंग्स का कला-ऐतिहासिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक अध्ययन", Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:04, July-August 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."

